।। ओ३म्।।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

समस्त देशवासियों को

५८वें गणतन्त्र दिवस

की हार्दिक शुभकामनाएँ

वर्ष ३१, अंक ८ एक प्रति : २ रुपये

सोमवार २१ जनवरी, २००८ से २७ जनवरी, २००८ तक

विक्रमी सम्वत् २०६४ दयानन्दाब्द : १८४

सष्टि सम्वत् १९६०८५३१०८ वार्षिक : १०० रुपये

फैक्स : २३३४३७३७ ई-मेल: aryasabha@yahoo.com

Website : www.delhisabha.com

18वां विश्व पुस्तक मेला : प्रगति मैदान नई दिल्ली

सोमवार 2 फरवरी से रविवार 10 फरवरी, 2008

सभा के वैदिक साहित्य प्रचार–प्रसार केन्द्र का उद्घाटन

हॉल नं. 12ए स्टाल नं. 74 उद्घाटन : 2 फरवरी, 08 प्रातः 11 बजे

आशीर्वाद : स्वामी जगदीश्वरानन्द जी सरवस्ती

इस अवसर पर "**सत्यार्थ प्रकाश**" को विशेष रियायती मूल्य पर विक्रय किया जाएगा एवं प्रचारार्थ निःशुल्क साहित्य भी वितरण किया जाएगा। आर्यसमाज एवं दानी महानुभाव इस हेतु अपना सहयोग अवश्य करें। समयदानी कार्यकर्ता मो0 9350502175 अथवा 9868242404 पर सम्पर्क करें।

–: निवेदक :–

ब्र0 राजसिंह आर्य	सोमदत्त महाजन	विनय आर्य	सुखबीर सिंह आर्य	रमेश आर्य
प्रधान	*वरिष्ठ उप प्रधान*	*महामन्त्री*	*संयोजक, स्टाल*	*सह संयोजक*

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली – 110001

दूरभाष : 011–23360150, 23365959; 23343737; E-mail : aryasabha@yahoo.com

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों की ओर से दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में

आर्य-परिवार होली मंगल मिलन समारोह

शुक्रवार २१ मार्च, २००८ सायं ३.३० से ७.१५ बजे

❖ नवसस्येष्टि यज्ञ : ३.३० बजे ❖ बच्चों के सांस्कृतिक कार्यक्रम ❖ भजन एवं हास्य रंग ❖ होली-मंगल मिलन एवं प्रीतिभोज : ७.१५ बजे

इस अवसर पर आपसे निवेदन है कि :- १.यह आर्यों के परिवारों के मिलन का पर्व है। अतएव आप अपने परिवार के छोटे से छोटे एवं बुजुर्गों सहित इस समारोह में सम्मिलित हाने का प्रयास करें। २. क्या आप किन्हीं ऐसे परिवारों के विषय में जानते हैं जिनकी पूर्व पीढ़ियों में आर्य समाज रचा बसा हो और अब वे किन्हीं कारणों से आर्य समाज के संगठन से सक्रिय सम्बन्ध न रख पाए हों ? कपया इस कार्यक्रम का उन्हें निमन्त्रण दें अथवा उनका नाम–पते के सम्बन्ध में सभा को सूचित करें जिससे सभा उनको इस समारोह में भाग लेने के लिए आमन्त्रित कर सकें। आप अपने नाम एवं पते दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के ई-मेल aryasabha@yahoo.com पर भी भेज सकते हैं। ३. **आर्यसन्देश साप्ताहिक** की आजीवन सदस्यता इस दिन केवल मात्र ५००/–रुपये में प्रदान की जाएगी। इसके बाद आजीवन सदस्यता शुल्क ७५०/– रुपये कर दिया जाएगा। अतः जो इसके सदस्य बनना चाहें वे इसका लाभ उठाएं। आर्यसन्देश साप्ताहिक ईमेल द्वारा भी भेजा जाता है यदि आप अपने किसी जानकार, रिश्तेदार आदि को भिजवाना चाहें तो उनका ईमेल पता अपने पत्र में लिखकर निवेदन करें।

आर्यजन दिन एवं समय नोट कर लें तथा सपरिवार इष्ट मित्रों सहित हजारों की संख्या में पहुंचकर समारोह को सफल बनाएं।

-: निवेदक :-

ब्र० राजसिंह आर्य (प्रधान) विनय आर्य (महामन्त्री) अनिल तनेजा (कोषाध्यक्ष)

अब साप्ताहिक आर्यसन्देश www.delhisabha.com पर

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रतिक्षित वैबसाईट ने कार्य करना आरम्भ कर दिया है। इस बैबसाइट पर आप सभा से सम्बन्धित अन्य जानकारियां, विभिन्न भाषाओं में सत्यार्थ प्रकाश (अंग्रेजी, मलयालम, स्वाहली) स्वामी दयानन्द के जीवन की सचित्र घटनाओं के साथ-साथ सभा का मुखपत्र 'साप्ताहिक आर्यसन्देश' भी पढ़ सकते हैं तथा डाउनलोड भी कर सकते हैं। इस वैबसाइट पर आपको नए-पुराने आर्यसन्देश भी पढ़ने कि लिए मिलेंगे।

आप आज ही वैबसाइट देखें और अपने विचारो, सुझावों तथा प्रतिक्रियाओं से सभा अधिकारियों को अवगत कराएं जिससे कि आवश्यक सुधार आदि कार्य किए जा सके। हमारा उद्देश्य आर्यसमाज का विश्वभर में प्रचार करना है। हमें विश्वास है कि यह कार्य हमारे लक्ष्य की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध होगा। *— विनय आर्य, महामन्त्री*

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में

अमरग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश लेखन के 125वें वर्ष पर पं० नरेशदत्त जी के वेद प्रचार रथ के माध्यम से

सत्यार्थ प्रकाश प्रचार कार्यक्रम

सभा की अन्तरंग बैठक दिनांक 23 दिसम्बर, 07 में लिए गए निर्णय के अनुसार महर्षि दयानन्द सरस्वती के अमरग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश प्रणयन के 125वें वर्ष के अवसर पर सत्यार्थ प्रकाश प्रचार यात्रा का कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। इस प्रचार यात्रा में पूर्व की भांति पं. नरेशदत्त जी के वेद प्रचार रथ का सहयोग लिया जाएगा। सभी आर्यसमाजों से निवेदन है कि अपने-अपने क्षेत्र में कम से कम एक दिन की प्रचार यात्रा का कार्यक्रम अवश्य बनाकर सभा को लिखें, ताकि उस क्षेत्र को भी प्रचार यात्रा में सम्मिलित किया जा सके। *— महामन्त्री, 9350204466*

गतांक से आगे

कार्तिक अमावस को डॉ० न्यूटन महाशय का आगमन 210

– स्व० स्वामी सत्यानन्द जी महाराज

महाराज ने उस समय शौच जाने की इच्छा प्रकट की। चार भक्तों ने उन्हें हाथों पर उठाकर शौच करने की चौकी पर बिठा दिया। निवत्त होकर वे फिर भली भांति शुद्ध हुए और आसन पर विराजमान हो गए।

उस समय स्वामीजी ने कहा कि आज इच्छानुकूल भोजन बनाइए। भक्तों ने समझा कि स्वामीजी आज अपेक्षाकत कुछ स्वस्थ हैं, इसलिए अन्न ग्रहण करना चाहते हैं। वे थाल लगाकर श्री महाराज के सामने ले आए। स्वामीजी ने टुक देखकर कहा कि अच्छा, इसे ले जाइए। अन्त में प्रेमियों की प्रार्थना पर उन्होंने चनों के झोल का एक चमचा ले लिया, फिर हाथ मुंह धोकर भक्तों के सहारे वे पलंग पर आ गए। शरीर की वेदना बराबर ज्यों की त्यों बनी हुई थी। श्वास रोग का उपद्रव पूरे प्रकोप पर पहुंच चुका था। पर वे शिष्य-मण्डली से वार्तालाप करते और कहते थे कि एक मास के अनन्तर आज स्वास्थ्य कुछ ठीक हुआ है। बीच बीच में जब वेदना का वेग कुछ तीव्र हो जाता, तो वे आँखें बन्दकर मौन हो जाते। उस समय उनकी वत्ति स्थूल शरीर का सम्बन्ध छोड़ देती– आत्मा–कारता को लाभ कर लेती।

इसी प्रकार पल विपल बीतते सांझ के चार बजने को आए। भगवान् ने नाई को बुलाकर क्षौर करने को कहा। लोगों ने निवेदन किया कि भगवन् उस्तरा न फिराइए। छाले फुंसियाँ कटकर लहू बहने लगेगा, परन्तु उन्होंने कहा कि इसकी कोई चिन्ता नहीं है। क्षौर कराकर उन्होंने नख उतरवाए। फिर गीले तौलिये से सिर को पोंछकर सिरहाने के सहारे पलंग पर बैठ गए। उस समय श्री महाराज ने आत्मानन्द जी को प्रेम से आहूत किया। जब आत्मानन्द जी हाथ जोड़कर सामने आ खड़े हुए, तो कहा–वत्स, मेरे पीछे बैठ जाओ। गुरुदेव का आदेश पाकर वे सिराहने की ओर, तकिए के पास, प्रभु की पीठ थामकर विनय से बैठ गए।

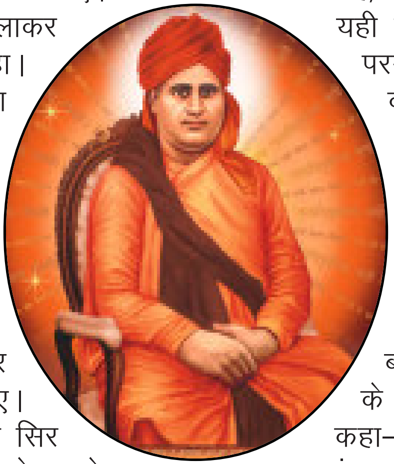

महाराज ने अतीव वत्सलता से कहा–वत्स, आत्मानन्द, आप इस समय क्या चाहते हैं ? गुरु महाराज के वचन सुनकर आत्मानन्द जी का हृदय भर आया। उनकी आंखों से एकाएक आंसुओं की लड़ी टूट पड़ी। गद्‌गद् गले से आत्मानन्द जी ने नम्रीभूत निवेदन किया कि यह, 'तुच्छ सेवक रात दिन यही प्रार्थना करता है कि परमेश्वर अपनी अपार कपा से श्री चरणों को पूर्ण स्वास्थ्य प्रदान करे। इसे इससे बढ़कर त्रिभुवन भर में दूसरी कोई वस्तु प्रिय नहीं है।"

महाराज ने हाथ बढ़ाकर आत्मानन्द जी के मस्तक पर रखा और कहा–वत्स इस नाशवान क्षणभंगुर शरीर को कितने दिन स्वस्थ रहना है ! बेटा अपने कर्तव्य कर्म को पालन करते आनन्द से रहना। घबराना नहीं। संसार में संयोग और वियोग का होना स्वाभाविक है।

महाराज के इन वचनों को सुनकर आत्मानन्द जी सिसक कर रोने लगे। गुरु वियोग–वेदना को अति समीप खड़ा देखकर उनका जी शोक सागर के गहरे तल में डूब गया।

गोपाल गिरी नाम के एक संन्यासी भी कुछ काल से श्रीचरण–शरण में वास करते थे। महाराज ने उनको आमन्त्रित करके कहा कि आपको कुछ चाहिए तो बता दीजिए। उन्होंने भी यही विनय की कि भगवन् ! हम लोग तो आपका कुशल–क्षेम ही चाहते हैं। हमें सांसारिक सुख की कोई भी वस्तु नहीं चाहिए। फिर महाराज ने दो सौ रुपये और दो दुशाले मंगाकर भीम सेन जी और आत्मानन्द जी को प्रदान किए। उन दोनों ने अश्रुधारा बहाते, भूमि पर सिर रखकर वे वस्तुएं लौटा दीं। वैद्यवर भक्तराज श्री लक्ष्मण दास जी को भी भगवान् ने कुछ द्रव्य देना चाहा; परन्तु उन्होंने द्रवीभूत हृदय से कर जोड़कर लेने से इन्कार कर दिया।

इस प्रकार अपने शिष्यों से गुरु महाराज को विदा होते देखकर, आर्य जनों के चित्त की चंचलता और चिन्ता की प्रचण्डता चरम सीमा तक पहुंच गई। वे बड़ी व्याकुलता से सामने आ खड़े हुए। उस समय, श्री स्वामीजी, अपने दोनों नेत्रों की ज्योति सब बन्धुओं के मुखमण्डलों पर डालकर, एक नीरव पर अनिवर्चनीय स्नेह संताप सहित, उनसे अन्तिम बिदाई लेने लगे। उनके प्रेम पूर्ण नेत्र, अपने पवित्र प्रेम के सुपात्रों को धैर्य देते और ढाढस बंधाते प्रतीत होते थे। महाराज प्रसन्नचित्त थे। उनके मुख पर घबराहट का कोई भी चिन्ह परिलक्षित नहीं होता था।

– 'श्रीमद्‌दयानन्द-प्रकाश' से

क्रमशः

जन्मदिवस 23 जनवरी पर विशेष

।। कीर्त्तियस्य सः जीवति ।।

महान क्रान्तिकारी नेताजी सुभाष चन्द्र बोस

भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के महान एवं अप्रतिम सेनानायक नेताजी सुभाषचन्द्र बोस का जन्म २३ जनवरी, १८६७ को उड़ीसाके कटक नगर में हुआ था। नेताजी के पिता जानकीनाथ बोस कटक में सरकारी वकील थे और अंग्रेजी सरकार ने उन्हें 'रायबहादुर' की पदवी दी थी।

बचपन से ही सुभाष चन्द्र बोस में निर्भीकता तथा साहस का अद्भुत समन्वय था। बी०ए० प्रथमश्रेणी में उत्तीर्ण करने के बाद सुभाष ने एम०ए० में प्रवेश लिया किन्तु पिता के दबाव के कारण पढ़ाई छोड़कर आईसीएस की परीक्षा हेतु लन्दन जाना पड़ा। उस समय यह परीक्षा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित की जाती थी। इस परीक्षा में सुभाष चन्द्र ने प्रथम श्रेणी लेकर सम्पूर्ण परीक्षार्थियों में तीसरा स्थान प्राप्त किया। इस महत्वपूर्ण सफलता पर सारे देश का ध्यान सुभाष बाबू की ओर गया। सुभाषचन्द्र के अन्तःकरण में तो भारतमाता की दासता की बेड़ियों को तोड़ डालने का सागर हिलोरें ले रहा था। वे आईसीएस बनकर अंग्रेजी सरकार की गुलामी कैसे करते? उन्होंने आईसीएस जैसे सर्वोच्च प्रतिष्ठित पद को ठोकर मारकर देश की स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष का बिगुल फूंक दिया। सन् १६२१ में वे कांग्रेस में सम्मिलित हो गए। अपने जोशीले तथा सम्मोहित कराने वाले भाषणों से सुभाष बाबू ने सारे राष्ट्र में तरुणाई को झकझोर दिया। उन्होंने यूरोप के समस्त देशों का भ्रमण किया और वहां पर भारतीय स्वाधीनता के पक्ष में प्रबल जनमत तैयार किया। वे अंग्रेजी सरकार की आंखों की किरकिरी बन गए। फलतः उन्हें अपने जीवन का अधिकांश समय जेलों में बिताना पड़ा।

महात्मा गांधी से वैचारिक भिन्नता के कारण उन्होंने कुछ दिनों के पश्चात् ही कांग्रेस के अध्यक्ष पद से त्यागपत्र दे दिया और स्वतन्त्रता की अग्नि प्रदीप्त करने के लिए 'फारवर्ड ब्लाक' नामक नए दल का गठन किया। सुभाष बाबू एक महान क्रान्तिकारी थे। भारत की जनता पर सुभाषचन्द्र बोस का इतना अधिक प्रभाव जम गया था कि उस समय देश का बच्चा-बच्चा उनके एक आह्वान पर मर मिटने को तैयार था। योजना बनी और सुभाष बाबू विभिन्न वेश बदलते हुए अंग्रजों के कड़े पहरे से निकलकर जर्मनी पहुंच गए।

जर्मनी से नेताजी सुभाष चन्द्र बोस जापान पहुंच गए। वहां पर जापान सरकार तथा अमर क्रान्तिकारी रासबिहारी बोस ने उनका भव्य स्वागत किया और पहले से ही गठित आजाद हिन्द फौज की कमान उन्हें सौंप दी। आजाद हिन्द फौज का प्रधान सेनापति बनने के बाद सुभाष बाबू ने फौज का मुख्यालय सिंगापुर बनाया जहां पर उन्हें भारतीयों का प्रबल समर्थन मिला।

भारतीय सैनिकों ने नेताजी को ओजस्वी भाषण देकर आजाद हिन्द फौज में मिला लिया। एक महान शक्तिशाली सेना के रूप में आजाद हिन्द फौज ने भारत की ओर कूच किया। सिंगापुर में सैनिकों को सम्बोधित करते हुए नेताजी ने कहा – ***"तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा।"***

आजाद हिन्द फौज के बाहदुर सैनिक बड़ी वीरता से युद्ध कर रहे थे और अण्डमान निकोबार द्वीप समूह विजित करते हुए बर्मा की सीमाओं के अन्दर बढ़ रहे थे। अंग्रेजी सरकार तथा लन्दन का राजसिंहासन थर–थर कांप रहा था। उनके द्वारा भारत की स्वाधीनता के लिए चलाया गया सैनिक अभियान इतना अधिक प्रबल था कि अंग्रेजी सरकार के पैर भारत में लड़खड़ा गए और इस सैनिक अभियान से घबराकर ही तत्कालीन ब्रिटिश हुक्मरानों ने भारत को स्वतन्त्रता देने का निश्चय कर डाला। १८ अगस्त १६४५ को नेताजी सिंगापुर से विमान द्वारा जापान की यात्रा पर थे, उसी दिन कहा जाता है कि उनके विमान में फारमोसा द्वीप के ताईपेह हवाई अड्डे के समीप आग लग गई और भाररतमाता का वह बहादुर सपूत हमेश–हमेशा के लिए भारत से जुदा हो गया। ***– स्व० राधेश्याम आर्य***

मुसाफिरखाना, सुल्तानपुर

(उनका अन्तिम लेख)

आर्यवीरांगनाओं हेतु सूचना

समस्त आर्य वीरांगनाओं से निवेदन है कि भारत में कहीं भी आयोजित हो रहे या होने वाले आर्यवीरांगना दल के कार्यक्रमों की सूचना **सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल** को मोबाइल नं० : **09828703993** पर अवश्य देवें, ताकि आगामी राष्ट्रीय आर्य वीरांगना दल शिविर की तिथियां तय करने में सुविधा हो सके।

– स्वामी उत्तमायति

(पूर्वनाम आचार्या उज्ज्वला वर्मा)

प्रधान संचालिका,

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल

वेदों में ऋषि (गुरु) एवं राजा का दायित्व

— *स्वामी रामस्वरूप, योगाचार्य*

भारतभूमि सदा से ऋषि, मुनियों एवं तपस्वियों की जननी रही हैं। इसी पावन भूमि से भारतीय संस्कति ''चारों वेदों'' का डंका पूरे विश्व में गूँजा था। जिस कारण यह महान देश विश्वगुरू और सोने की चिड़िया कहलाया था। जहाँ गुरू वशिष्ठ, विश्वामित्र, विदुषी गार्गी, ऋषि याज्ञवल्क, वामदेव तथा व्यास मुनि जैसे असंख्य ऋषि-मुनियों ने यहाँ जन्म लिया, वहाँ ऋषियों द्वारा ही शिक्षित मनु, राजा हरिश्चन्द्र, दशरथ, जनक तथा श्री राम इत्यादि असंख्य राजर्षियों का उदय इस पवित्र भूमि पर हुआ जिन्होंने संपूर्ण पथ्वी की प्रजाका पुत्रवत पालन करके वैदिक परम्परा को जीवित रखा था। अथर्ववेद मंत्र १६/४१/१ में कहा कि मानव कल्याण की कामना करते हुए इस पथ्वी पर ऋषियों ने तप अर्थात् वेदाध्ययन, इन्द्रिय-संयम, नियम तथा व्रत की शिक्षा का पहले स्वयं अनुष्ठान किया और फिर उससे प्राप्त हुई शक्ति के द्वारा मानवकल्याणार्थ राष्ट्र निर्माण के व्रत की ऐसी पावन परम्परा पिछले तीनों युगों में भारतभूमि पर विद्या प्रसार, कर्तव्य बोध, हर्ष-उल्लास, पुरषार्थ, भाईचारा, सुरक्षा, समद्धि एवं धर्म आदि अनेक गुणों द्वारा प्रजा का पालन करती रही है। फलस्वरूप ही मानव जाति की सुरक्षा एवं उसके कल्याण की कामना भी रहा है। यजुर्वेद मंत्र ४०/७ में इसी भाव को इस प्रकार व्यक्त किया है कि जो विद्वान गुरु प्राणीमात्र को अपनी आत्मा के समान जानता है। अर्थात् जैसा हित अपना चाहता है वैसा ही अन्य प्राणी का भी चाहता है वह शोक, मोह, लोभ, आदि दोषों को प्राप्त नहीं होता। यजुर्वेद मंत्र ३४/४१,४२ में परमेश्वर और ऋषियों को प्राणीमात्र को सुख सम्पदा देने वाले और उनकी पुष्टि करने वाले कहा है और प्राणियों को उनके शील व नियम के अनुकूल बर्ताव करने को कहा है, जिससे मानवता कभी हिंसित न हो, नष्ट न हो। इन मंत्रों से यह सिद्ध है कि वैदिक परम्परा में की गई भक्ति द्वारा ऋषियों/गुरुजनों के हदय में राष्ट्रहित एवं मानव कल्याण की भावना स्वतः ही जागत हो जाती है जिसे मुख्यतः वेदों ने ईश्वर भक्ति विशेष कहा है। वर्तमान में धर्म गुरुओं। सम्प्रदाओं में ऐसी शुभ भावना का प्रकट न होना तो ईश्वर और धर्म के नाम पर जनता/सरकार से धन बटोरने, विषय विकार फैलाने, ठगी, दुराचार, हिंसा और विघटन का मार्ग नहीं कहा जाये तो और क्या है? अतः ऐसी आवाज बुलंद करने वाले धर्मस्थलों से ही मुख्यतः मानवता पर आक्रमण हुआ और यही से शस्त्रों के बड़े—बड़े जखीरे प्राप्त हुए हैं। जबरदस्ती का धर्मपरिवर्तन और कट्टरपंथियों द्वारा हिंसा का घणित वातावरण ईश्वरभक्ति में कोई स्थान नहीं रखता। और यदि राजा—राजनेता देश में व्याप्त इन कुरीतियों का नाश करने में सक्षम नहीं है तब तो इन्हीं की उदरपूर्ति, कुर्सी की लोलुपता, विलासिता और शानो-शौकत से जीने का चस्का इत्यादि दोष गुलामी के समय के राजाओं के दोषमुक्त आचरण की तरह अब भी देश का विघटन क्यों न कर देगा? क्योंकि अपने बेटे दुर्योधन को कुर्सी देने के मोह ने धतराष्ट्र को अंधा बना दिया था, जिस कारण भारतभूमि को महाभारत जैसे विनाशकारी संघर्ष से गुजरना पड़ा, जिसका दुष्प्रभाव अभी तक हम भोग रहे हैं। हमारा देश आध्यात्मिकवाद पर आधारित देश हैं। अतः ऋषियों द्वारा अपनाई वैदिक परम्परा के अनुसार प्रत्येक धार्मिक सम्प्रदाय संस्कति की रक्षा राष्ट्र बल निर्माण, पराक्रम तथा सर्वदा हिंसा रहित मानव कल्याण की भलाई जैसी नीतियों पर टीका होनी चाहिए।

— शेष पष्ठ ६ पर

ब्रह्म-सूत्र द्वितीय अध्याय - प्रथम पादः (23)

— *डॉ. भारत भूषण 'विद्यालंकार'*

अश्यादिवच्च तदनुपपत्तिः।।२३।।

अर्थ :- (अश्मादिवत्) पत्थर आदि की तरह (च) और (तदनुपपतिः) (जीवात्मा का ब्रह्मरूप में होना) युक्तिसंगत नहीं है।

भावार्थ :- जिस प्रकार विभिन्न भौतिक पदार्थों (पत्थरआदि) के सत्तारूपी समान धर्म होने पर पत्थर, तो जीवात्मा में ब्रह्म के गुण क्यों नहीं पाए जाते । आचार्य उत्तर देते हैं कि—व्यापक के गुण व्याप्य में आएं यह आवश्यक नहीं है। प्रत्येक पदार्थ का अपने—अपने गुणों के साथ सामान्य संबंध है। गुणों को पदार्थ से कभी अलग नहीं किया जा सकता। जीव और ब्रह्म दोनों अलग—अलग तत्व

पथ्वी के प्रथम चक्रवती राजा का उदय मनु भगवान के रूप में हुआ था। मनु राजर्षि थे और उनके अधीन जनता सब प्रकार से सुख सम्पन्न थी। ऊपर के मंत्र का भाव भी यही है कि ऋषियों का वेदाध्ययन, तप, संयम, नियम, यज्ञ इत्यादि केवल ईश्वर प्राप्ति के लिए ही न होकर, समान रूप से उज्ज्वल राष्ट्र निर्माण द्वारा सम्पूर्ण धर्मनिरपेक्षता का अर्थ संकुचित एवं दूषित विचार वाला होकर देश में साम्प्रदायिक हिंसा करके सन् १९४७ की तरह देश का विभाजन करने वाला कदापि नहीं होना चाहिए। जहाँ हम यह समझे कि ईश्वरभक्ति में हिंसा का कोई स्थान नहीं, वहाँ इतिहास के पन्ने हमें स्पष्ट बता रहे हैं कि प्रत्यक्ष में सबका ईश्वर, खुदा, गॉड एक ही है।

बोध कथा

सदा प्रसन्न रहो

– महात्मा आनन्द स्वामी

मैं एक बार एबटाबाद गया। एक सज्जन के यहां ठहरा। मेरा स्वभाव है बच्चों के साथ खेलना। उनके भी बच्चे थे। दिनभर मैं उनके साथ खेलता रहा। श्रीमान् जी दफ्तर गए हुए थे। दिनभर घर के अन्दर हंसी के ठहाके गूंजते रहे। परन्तु जैसे ही साढ़े चार बजे, वैसे ही एक बच्चे ने कहा – "अरे ! पिताजी के आने का समय हो गया।"

दूसरे ने कहा – "समय क्या, सामने सड़क पर तो आ रहे हैं वे।"

जल्दी से एक बच्चा सोफे के नीचे जा छुपा, एक पलंग के नीचे घुस गया, एक मेज के नीचे चला गया। हर और सन्नाटा छा गया। श्रीमान् जी बड़े रोब से आए। सामने वाली कुर्सी पर बैठ गए।

मैंने पूछा – "तुम्हारे बच्चे तुमसे इतना क्यों डरते हैं? वह देखो, तुम्हें आता देखकर एक मेज के नीचे जा छुपा है। एक सोफे के पीछे दुबका पड़ा है। एक पलंग के नीचे घुस गया है।"

वे श्रीमान जी मुस्करा भी नहीं सके; बोले – "मैं घर में तनिक रोब से रहता हूं। इससे घर का डिसिप्लिन ठीक रहता है।"

मैंने कहा – "तुम्हारा यह घर है या सैण्ट्रल जेल? यह क्या रोब जमा रखा है तुमने कि तुम आओ और बच्चों के प्राण सूख जाएं? अरे होना तो यह चाहिए कि तुम आओ और बच्चे चिपट जाएं, कोई सिर पर चढ़ जाए और कोई हाथ पकड़ ले, कोई कन्धे पर बैठे। ऐसा करने से तुम्हारा भी रक्त बढ़ेगा, बच्चों का भी।"

इसीलिए वेद कहता है – सदा प्रसन्न रहो ! जो प्रसन्न नहीं रहता उसे गहरस्थ–आश्रम में प्रविष्ट होने का, उसमें रहने का कोई अधिकार नहीं। ❑

पथ्वी, सूर्य, चाँद आदि पदार्थ ब्रह्मरूप यानी एकरूप नहीं है, उसी प्रकार जीवात्मा और ब्रह्म में चेतनता रूप समान धर्म होने पर भी जीवात्मा का ब्रह्मरूप होना सही नहीं है। इसमें संदेह नहीं कि जीव और ब्रहम दोनों चेतन हैं, परन्तु इनमें ब्रह्म सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी है। जब कि जीव अल्पज्ञ और अल्पशक्ति है। जीवात्मा कितना ही प्रयास करे वह सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान और जगत् का स्रष्टा नहीं हो सकता। जीव के शरीर आदिहोने से वह अपने कर्मानुसार फलों को भोगता है और मोक्ष पाने का प्रयास करता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि वह ब्रहम रूप नहीं है।

उपनिषद् के वचनों से ऐसा प्रतीत होता है कि जीवात्मा ब्रह्मरूप है, जैसे ईशोपनिषद् (१६) में कहा है– ***''यो सावसौ पुरुषः सोहमस्मि।''***

जो वह पुरुष है, वह मैं हूँ और छांदोग्य उपनिषद् (६.८.७) में कहा है–

''स आत्मा तत्वमसि श्वेतकेतो।''

हे श्वेतकेतो ! वह आत्मा तुम हो। इससे ऐसा प्रतीत होता है कि आत्मा को ब्रह्म के रूप में बताया गया है।

ये प्रसंग वस्तुतः जीवात्मा और ब्रह्म की एकता को चुनौती देते लगते हैं। पहले वाक्य में जीवात्मा प्रार्थना करने वाला है और ब्रह्म प्रार्थ्य है। ये दोनों कैसे एक हो सकते हैं?

इस विषय में शिष्य जिज्ञासा करता है कि जब जीवात्मा में ब्रह्म व्यापक है प्रदार्थ है। ब्रह्म सूक्ष्म होने के कारण सर्वत्र व्यापक है। जड़ पदार्थों में भी ब्रह्म उसी प्रकार व्यापक है जैसे चेतन आत्मा में। पत्थर लकड़ी, लोहा, सोना, हीरा, आदि जड़ पदार्थों में भी ब्रह्म की सत्ता है। परन्तु पथ्वी आदि पदार्थ प्राकतिक होने से विकारी हैं। इनमें ब्रह्म की व्यापकता से कोई विकार नहीं आता तो निर्विकार तत्व जीवात्मा में ब्रह्म के व्यापक होने से कैसे विकार आ सकता है? पत्थर आदि जड़ पदार्थों में ब्रह्म के व्यापक होने पर भी जिस प्रकार ब्रह्म के गुण नहीं पाए जाते हैं उसी प्रकार जीवात्मा में भी समझना चाहिए।

– शिष्य प्रश्न करता है कि संसार में निर्माता को उपादान तत्व के अतिरिक्त भी निर्वाण के लिए अनेक साधन वस्तुओं की आवश्यकता होती है, जैसे कुम्हार को घड़ा बनाने के लिए उपादान तत्व मिट्टी के अलावा भी चाक, जल, दण्ड आदि की आवश्यकता होती है। परन्तु ब्रह्म के विषय में ऐसा वर्णन नहीं मिलता कि उसे सष्टि रचना के लिए उपादान प्रकति के अतिरिक्त किसी अन्य सामग्री के संग्रह की आवश्यकता होती हो। इससे संदेह होता है कि ब्रह्म सष्टि का कर्ता है भी या नहीं। सूत्रकार आचार्य अगले सूत्र में शिष्य की शंका का समाधान करेंगे।

– सी-२ए/६० जनकपुरी,
नई दिल्ली-५८

Question & Answer

What is Darshan Shastra?

Readers are requested to send their questions to us relating to Vedas, Yoga, Yajna, Spiritual Topics and Current Affairs. Please go to **www.vedmandir.com.** You can also send them to "Arya Sandesh" Delhi Arya Pratinidhi Sabha, 15- Hanuman Road, New Delhi. - **Editor**

The questions are answered by Swami Ramswarup ji.

Q. : What is Darshan Shastra? **Vikas**

Ans.: There are six darshans in India-i.e., Yog Darshan(Shastra), Sankhya Darshan, Vedant Darshan, Vaishishik Darshan, Mimansa Darshan written by ancient Rishis who were learned in Vedas and Ashtang Yoga Philosophy. Some people say that shastras are against each other or Sankhya Shastra spreads atheism which is totally false. Such people have never studied Vedas, the eternal/immortal knowledge which emanates direct from God, at the time of creation. All darshans i.e., shastras contain the knowledge of Vedas. However, each Darshan has its one main subject only, for e.g., Yog Shastra states about Yoga philosophy, Sankhya shastra states about Prakriti, Vedanta Shastra states about God etc., etc. But each shastra has little bit explanation of its own subject and full details still are in Vedas.

Q. : I have an 8 year old daughter. We want only one child. Everybody says that we get moksh only when Beta gives agni and not Damad. If Damad does that one goes to Narak, is it true? **Rekha Nautiyal**

Ans. : No, the above statement is totally false being against the Vedas. Bheesham Pitamah, Veer Hanumanji, Bal-brahmacharini Gargi, Acharya of Janak were Brahmachari and got salvation (Moksh) . King Janak had only two daughters- Sita and Urmila and got salvation. Rishi Yagyavalkyaji had two wives and had no issue but got salvation. Sri Ram left home at the age of 86 years and went to jungle alone and left his pious body there in jungle alone. Mahabharat states that Sri Krishna and his brother Balram went to the jungle alone and left their bodies there in jungle alone etc., etc. The false statements are told only by those who unluckily do not study Vedas, Valmiki Ramayana, Geeta, etc.

Q.: How many years before, Shri Ram was born? Whether any Samvat

वाल्मीकि रामायणे जीवनदर्शनम्

अत्र रामस्य पितभक्तिसमकालमेव – "प्राणा गच्छेयुर्न पुनर्वचनम्" इति रघुकुलरीतिरपि सुस्पष्टं प्रख्यापिता कविना।

वाल्मीकिदशा राम भरत लक्ष्मण सदशं भ्रातत्वमेव परिवारे समाजे च नितान्तं सुखावहम्। रामस्य भ्रात स्नेहस्तु विश्वस्मिन् आदर्शभूतः। कैकेयीवचनाद् आत्मनः स्थाने भरतकते राज्यसिंहासन प्रसंगे सम्प्राप्ते भरतं प्राणेभ्योप्यधिकतरं मान्यमानः आदर्श चरित नायको रामः स्वभावमित्थम भिव्यनक्ति –

अहं हि सीतां राज्यं च प्राणानिष्टान् धनानि च।
दष्टो भ्रात्रे स्वयं दद्यां भारताय प्रचोदितः।। २/१६/५

एवमेव लक्ष्मणोपि रामस्य प्राणस्परूपः। यथाह श्रीरामो वनगमन काले –

स्निग्धो धर्मरतो वीरः सततं सत्पथे स्थितः।
प्रियः प्राणसमो वश्योभ्राता चापि सखा च मे।। २/१६/८

लक्ष्मणेन विना रामस्य कते सर्वम् व्यर्थम्। समरभुवि मतवत्पतितं लक्ष्मणं दष्ट्वा विलपतो रामस्य मनोभावमवलोकयन्तु –

न हि युद्धेन मे कार्य नैव प्राणैर्न सीतया।
भ्रातरं निहतं दष्ट्वा लक्ष्मणं रणपांसुषं। २/५६/२
देशे-देशे कलत्रणि देशे देशे च बान्धवाः।
तं तु देशं न पश्यामि यत्र भ्राता सहोदरः।। २/५६/३

अत्र रामस्य भ्रातस्नेहः पराकाष्ठां गतः। किन्तु रामं प्रति भरतलक्ष्मणयोर्भक्तिरपि न्यूनतां न धारयति। लक्ष्मणो रामेण बिना त्रैलोक्यस्य राज्यं, स्वर्गं, मोक्षं, वापि न कामयते। रामेण भूयो भूयः वनगमनानिन्वारितापि दढ़मतिर्यतिवरो लक्ष्मणः कथयति –

अहं त्वानुगमिष्यामि वनमग्रे धनुर्धरः।
न देवलोकाक्रमणं नारत्वमहं वणे।। २/१६/३
ऐश्वर्यवापि लोकानां कामये न त्वया बिना।। २/१६/४

एवमेव भारतस्य रामभक्तिरपि नूनं प्रशंसनीया। दशरथस्य परलोकगमनानन्तरं प्रवासात्प्रतिनिवत्तो भरतः रामदर्शनं प्रति अत्यन्तं समुत्सुकः सन् वदति –

यो मे भ्राता पिता बन्धुर्यस्य दासोस्मि धीमतः।
तस्य मां शीघ्रमाख्याहि रामस्याक्लिष्टकर्मण।।

– क्रमशः

सरल सत्यार्थ प्रकाश

was in existance at that time? If so, what was that? **Prakash Lakhani**

Ans. : Sri Ram ji was born before one crore, eighty one lakh, forty nine thousand and about eighty years. In sunder kand of Valmiki Ramayan, written by Valmikiji , in shlokas 11,12 it is mentioned that there were elephants each having white, four teeth. Such elephants were available from two and a half crore to fifteen lakh years ago in Africa. According to this shloka too, Sri Ram ji was born before nine lakhs years.

Q.: Were Dhruv Bhakt , Raja Bali, Raja Shivi ancestors (Poorvaj) of Shri Ram? If so, I have heard that Raja Bali was Danav how can he be poorvaj oh Shri Ram? Please tell me Vanshawli of Shri Ram from begining? **Prakash Lakhani**

Swami Ramswarup: Dhruv and Raja Bali were not the forefathers (poorvaj) of Shri Ram. The lineage of Shri Ram has been mentioned in Valmiki Ramayana right from Manu Bhagwan from Satyug but Dhruv and king Bali have not been included.

Lineage is like this- Shri Ram was born in Ikshwaku family. Manu was the first king of this earth. Then Ikshwaku was the son of Manu. Then Kukshi, Vikukshi, Bann, Anrannya, Prathu, Trishanku, Dhundhumar, Yuvnashva, Mandhata, Susandhi, Dhruvsandhi, Prasenjit, Bharat, Asit, Sagar, Asmanj, Anshuman, Dileep, Bhagirath, Kakutsth, Raghu, Pravridh, Kalmashpad, Shankhan, Sudarshan, Agnivarna, Sheeghrag, Maru, Prashushruk, Ambreesh, Nahush, Yayati, Nabhag, Aj, Dashrath and then Shri Ram, Laxman, Bharat, Shatrughan.

To be continued...

वेद–वाणी

साधना चैनल

हर रविवार सायं 6.55 बजे

रविवार 27 जनवरी, 2008

–: प्रवचन :–

आचार्य अखिलेश्वर जी

–: प्रसारण-सहयोगी :–

आर्यसमाज जनकपुरी

सी–ब्लाक, नई दिल्ली–110058 **एवं**

श्री चन्दूलाल रा. अग्रवाल, प्रधान

श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, मन्त्री

आर्यसमाज महर्षि दयानन्द मार्ग, रायपुर दरवाजा बाहर, अहमदाबाद (गुजारात)

सत्यार्थ प्रकाश के प्रणयन की १२५ वीं वर्षगांठ पर आयोजित सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव के अवसर पर लगभग सभी वक्ताओं ने कहा कि प्रत्येक भारतीय को सत्यार्थ प्रकाश पढ़ना चाहिए। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु हमने वैदिक विद्वान श्री सत्यकाम वर्मा जी की पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश सन्देश से जो अत्यन्त सरल भाषा में लिखी गई है एक-एक समुल्लास आर्य संदेश में प्रकाशित करने का निश्चय किया है। आशा है इसे पढ़कर प्रत्येक भारतीय प्रेरणा लेगा और अन्यों को भी इसे पढ़ने के लिए प्रेरित करेगा। सभी आर्य समाजों से निवेदन है कि वे एक-एक समुल्लास के प्रकाशन पर पत्रक के माध्यम से इसका प्रचार-प्रसार करे जिससे सत्यार्थ प्रकाश का सन्देश घर-घर में जाए और इसकी सुगन्धि चहुं ओर फैले। - सम्पादक

सप्तम समुल्लास : ईश्वर और वेद

गत अंक से आगे –

सष्टि के आरम्भ में परमात्मा ने अग्नि, वायु, आदित्य और अगिंरा के आत्मा में क्रमशः ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेद और अथर्ववेद का प्रकाशन किया। वेद चार ही हैं। अधिक नहीं। ईश्वर ने मनुष्यों द्वारा प्रयुक्त किसी भाषा में वेदों का प्रकाशन न करके सब मनुष्यों के लिए समान और किसी भी देशविशेष की भाषा न होने से 'संस्कत' को ही वेदों के प्रकाशन न करके सब मनुष्यों के लिए समान और किसी भी देशविशेष की भाषा न होने से 'संस्कत' को ही वेदों के प्रकाशन का माध्यम चुना। बाद में इसी भाषा को वेदज्ञ मनुष्यों ने अपने व्यवहार में लाना आरम्भ किया। इसलिए ईश्वर पक्षपाती नहीं कही जा सकता। इस भाषा का अर्थज्ञान भी ईश्वर ने उन आदि ऋषियों के मन में स्वयं ही प्रकाशित किया। धर्मात्मा योगी लोग जब–जब भी ध्यानावस्थित होकर समाधिस्थ हुए, तब–तब परमात्मा ने अभीष्ट मंत्रों के अर्थ का ज्ञान उन्हें कराया। पूर्ण अर्थज्ञान होने पर ही ऋषि-मुनियों ने इतिहास पूर्वक जो ग्रन्थ बनाए, वे ही ब्रह्मणादि' कहलाए। 'बह्म' अर्थात् वेद का ज्ञान होने से ही उन ग्रन्थों का नाम ''ब्रह्मण'' हुआ। इन्हें 'वेद कहना उचित नहीं निरूक्त आदि वेदार्थ प्रकाशन ग्रन्थों में इन्हें वेदों से पथक है गिनाया गया है। यही बात वेदों की शाखाओं के विषय में है। मनुष्यकत होने से वेदों की तुल्य नहीं मानी जा सकतीं। 'वेद' तो नित्य हैः अर्थात् उन्हीं मंत्रों के रूप में इसी क्रम से प्रकाशित होते हैं, मनुष्यकत शाखादि के क्रम से नहीं। 'वेद' को पुस्तक कहना उचित नहीं। पुस्तक तो वे निरूक्त ब्रह्मणादि ग्रन्थ एवं शाखाग्रन्थ हैं, जिन्हें वेदों का ज्ञान प्राप्त करके ऋषि-मुनियों ने लिखा है।

–: साभार :–

सत्यार्थ प्रकाश सन्देश

पृष्ठ ३ का शेष

वेदों में ऋषि (गुरु) .....

अन्यथा मनु, हरिश्चन्द्र से लेकर श्रीराम, श्रीकष्ण एवं युधिष्ठिर इत्यादि असंख्य राजऋषियों द्वारा एक सूत्र में गठित सुहावने राष्ट्र की परम्पराओं को तोड़कर स्वार्थपूर्णता एवं तर्कहीन युक्तियों पर आधारित आडम्बरों से ओत–प्रोत धर्म की आड़ लेकर अपने ही वर्चस्व को कायम करने वाले, सरकार द्वारा संरक्षित तथाकथित सम्प्रदायों/ धर्मगुरूओं ने एक दिन फिर देश को विघटन के कगार पर ला खड़ा करना है। इसी धार्मिक उन्माद से कट्टरवाद और हिंसक उग्रवाद का जन्म होता है जो मानवता के लिए घातक है। देश के बुद्धिजीवी राजा, राजनेता एवं हम सबकों इस तथ्य पर विचार करना होगा कि आज का विशेष कर्म एवं धर्म है। जैसेएक किनारे की नदी कहीं नहीं होती, इसी प्रकार वैदिक संस्कति में केवल एक तरफा ईश्वर नाम, पूजा इत्यादि अथवा इसके विपरीत एक तरफा केवल भौतिकवाद की चमक-दमक को जीवन का ध्येय नहीं कहा गया है। यजुर्वेद मंत्र ४०/१४ में अध्ययात्मवाद एवं भौतिकवाद दोनों की साथ-साथ उन्नति को ही जीवन का यथार्थ सत्य कहा गया है। जहाँ अध्यात्मवाद में ईश्वरभक्ति कही गई है वहीं भौतिकवाद में राष्ट्र बल एवं मानव कल्याण को स्वीकार किया गया है। दोनों की साथ–साथ उन्नति अमीर किसी को भी न्यायप्रणाली में कदापि कोई शंका न होवे। यजुर्वेद मंत्र १/२७ में ईश्वर ने राजा को धार्मिक विद्वान होकर प्रजा में विद्या और धर्म (कर्तव्य) की स्थापना कराकर उसका पालन भी कराना राजा का दायित्व कहा है। जैसे सूर्य की किरणें पथ्वी का अन्न, जल इत्यादि से पालन पोषण करती है; उसी प्रकार राजा/ राजनेता प्रजाजनों का उचित प्रकार अन्न एवं धन इत्यादि की व्यवस्था करके उत्तम शिक्षा द्वारा प्रजा का पालन पोषण करे। अथर्ववेद मंत्र २/७/१ कहता है कि चांद की चांदनी पथ्वी पर शीतलता एवं शान्ति प्रदान करती है, उसी प्रकार राजा/राजनेता राज्य की प्रजा को उपद्रव रहित करके उसमें शान्ति प्रदान करे। इस प्रकार वैदिक वाड्मय में ऋषियों (गुरुजनों/ धार्मिक सम्प्रदाय) तथा राजा/ राजनेताओं की कर्तव्य बोध एवं कर्तव्य पालना की प्रणाली ही उज्ज्वल राष्ट्र निर्माण का हेतु निश्चित की गई है। जिसका उदाहरण राजा दशरथ के साथ विद्वान गुरू वशिष्ठ, श्रीकष्ण के साथ उनके गुरू संदीपन एवं राजा जनक के साथ ऋषि याज्ञवल्क इत्यादि जैसे असंख्य राजाओं का संग सुन्दर व्यवस्था को रामायण इत्यादि सद्ग्रन्थों में प्रस्तुत करता है। कठोर परिश्रम द्वारा विकसित एवं मानव कल्याण से ओतप्रोत इस सनातन वैदिक संस्कति तीन युगों की भांति वैदिक धर्म पर आधारित सरकार चुनना और राम राज्य के सुखों की कल्पना करना अब एक अतीत का प्रश्न बनता जा रहा है। अतः जो राजनैतिक दल हमारे सामने बने खड़े हैं और जिनकी सरकारें पिछले पचास वर्षों से जनता को गरीबी, भ्रष्टाचार, अन्याय एवं भीतरी–बाहरी असुरक्षा। के भय से युक्त वातावरण में जीने को मजबूर करती रही है, सरकार अभी भी उन्हीं में से किसी एक की बननी है। वर्तमान का मध्यावधि चुनाव निश्चित रूप से भारतीय लोकतंत्र की अपरिपक्व और दोषपूर्ण स्थिति को ही प्रस्तुत करता है। भारतवर्ष की स्वतंत्रता से पूर्व ब्रिटेन के प्रधानमंत्री ने हमारी संस्कति को नष्ट होते देखकर ही शायद हमारे अंधकारमय जीवन की झांकी को इन शब्दों में व्यक्त किया था :– ''भारत की सत्ता लुटेरों के हाथों में चली जायेगी पानी की एक बोतल और एक रोटी भी टैक्स से नहीं बचेगी और केवल वायु ही मुक्त होगी। नेता घटिया चरित्र वाले और दुर्बल होंगे। उनकी वाणी मधुर होगी, किन्तु ह्रदय मलिन होगा। वह सत्ता के लिए परस्पर लड़ेगें और भारत राजनीतिक झगड़ों में खो जायेगा।''

ऐसे उपहास भरे शब्द आठ सौ वर्ष मुसलमानों और दो सौ वर्ष अंग्रेजों की गुलामी में भारतीय संस्कति से हीन हमारे जीवन की दुर्दशा पर ही आधारित है। अतः हमारे राजा/ गुरूजन संकुचित एवं दूषित स्वार्थपूर्ण विचारों का त्याग करके अपनी सनातन संस्कति के सूर्य पर आये अविद्या। अज्ञान के काले–काले बादलों एवं आडम्बरों का नाश करने का संकल्प लेकर राष्ट्र सुरक्षा एवं न्याय को उन्नति का संकल्प लेकर राजर्षियों द्वारा स्थापित पुरातन परम्परा को स्थापित करके कतज्ञ होंवे। अन्यथा १९४८ में पाकिस्तानी कबाइलियों का कश्मीर पर आक्रमण, दो बार पाकिस्तान द्वारा हम पर थोपा युद्ध, चीन द्वारा युद्ध में हड़पी हमारी जमीन और अभी–अभी पाकिस्तान द्वारा कारगिल की घुसपैठ तथा बिल लादेन को धमकी हमारी सुरक्षा, आत्मसम्मान, हमारी एकता हमारी आन्तरिक कलह में आयी दरारों को स्पष्ट रूप से दर्शा रही है। वैदिक संस्कति के आधार पर यह कहना गलत न होगा कि इस दरार का मुख्य कारण संभवतः राजा। राजनेता तथा गुरू शब्द के पहले लगा वैदिक संस्कति का महान शब्द ''विद्वान'' तो कहीं खो नहीं गया?

– योल कैम्प, यौल बाजार, कांगड़ा (हिमाचल प्रदेश)

आर्यसन्देश - चतुर्थ अंक : नारी संसार

ही को वास्तविक ईश्वरभक्ति स्वीकार किया गया है। ऐसी शील, धर्म, कर्म वाली मानव कल्याण युक्त वैदिक वाणी को भुलाकर ही तो आज राजा, प्रजा, गरीब, अमीर, सभी दुःख के सागर में पड़े सुख की नींद भी नहीं ले पाते। राष्ट्र निर्माण एवं मानव कल्याण की भावना से रहित आध्यात्मिकवाद ही तो आज संकुचित एवं दूषित विचारों वाला होकर उदरपूर्ति, स्वार्थ, कट्टरपंथ तथा उग्रवाद को बढ़ावा देने वाला हो गया लगता है जो राष्ट्रहित अथवा मानव-कल्याण में नहीं है। वेदानुसार राष्ट्र निर्माण में यह तो कर्तव्य हुआ गुरुजनों एवं धार्मिक सम्प्रदायों का श्रेष्ठ कर्तव्य भी वर्णित है, जिसका तनिक सा वर्णन यहाँ दिया गया है।

वेदों ने राजा। राजनेताओं को प्रथम तो वेदों का ज्ञाता, प्रजा का रक्षक एवं धार्मिक होना आवश्यक कहा है। राजा के राजकोष में अक्षय धन हो तथा राजा प्रजा की पुकार सुनकर सदा उसकी रक्षा करने वाला हो। न्यायकर्ता राजा योग्य अधिकारियों द्वारा प्रजा की पुकार सुनकर सदा उसकी रक्षा करने वाला हो। न्यायकर्ता राजा योग्य अधिकारियों द्वारा प्रजा का पालन प्रेमपूर्वक करे (देखें यजुर्वेद ६/३२, अथर्ववेद काण्ड २० सूक्त ६)। सामवेद मंत्र ३१६ में प्रजा सहित ऋषिराज राजा से अन्याय रूपी अन्धकार को दूर करके न्याय रूपी प्रकाश करने का अनुरोध करने है। अतः राजा राज्य में ऐसी न्याय व्यवस्था स्थापित करे जिसमें गरीब अथवा को इस युग में विनिष्ठ करने पर तुले विश्व के राजनेता निश्चित रूप से ही बुद्धिमान और विचारवान नहीं कहे जा सकते; क्योंकि संस्कति का उदय केवल मानव कल्याणार्थ ही हुआ है। जब संस्कति ही नहीं रहेगी, तब मानव कल्याण का तो प्रश्न ही समाप्त हो जायेगा। भारत मूलतः वैदिक संस्कति पर आधारित आध्यात्मिक देश है। अतः इसकी प्रजा पालन की मूल पद्धति नष्ट नहीं होनी चाहिए। संस्कति को घुन लगने के कारण ही आज के अधिकतर गुरुजनों एवं धर्म सम्प्रदायों ने केवल एक तरफा ईश्वर नाम की रट लगाकर अथवा राष्ट्र रक्षा की दुहाइयां देकर जनता/सरकार से धन बटोरने और केवल अपना वर्चस्व स्थापित करने का जो ढोंग रच रखा है उसे यदि न रोका गया तो एक दिन देश गम्भीर खतरे में पड़ सकता है। दूसरी ओर संस्कति से अनभिज्ञ राजा/राजनेता यदि वोटों के लिए जनता को झूठे आश्वासन दे–देकर ठगते रहे, धन बटोरते रहे, विलासिता में डूबे रहे, सत्ता हथियाने के लिए किसी भी हद तक जाते रहे, तो समझो कि देश के भविष्य पर निश्चित ही प्रश्नचिन्ह् अंकित हो गया है। वैदिक परम्परा में दो ही शक्तियां देश को सुरक्षा न्याय प्रदान करने के लिए ईश्वर ने निश्चित की है। प्रथम विद्वान गुरू एवं दूसरा विद्वान राजा। अब यदि वैदिक संस्कति का महान शब्द 'विद्वान' नहीं रहेगा तो केवल गुरू एवं राजा शब्द देश का कल्याण करने में कदापि समर्थ नहीं हो सकते। वर्तमान काल में पिछले

महाराणा प्रताप की धर्मपत्नी ने धर्म निभाया

घास इक्ट्ठा कर रोटी बनाई गई। वह नन्हीं–मुन्नी को, जो भूख से बिलबिला रही थी, उसके हाथ में वह रोटी पकड़ाई गई। मां ने अपनी लाडली को भूख से राते देखकर बहलाने के लिए यह विधि अपनाई थी। तभी उस जंगल बियाबान में एक जंगली बिल्ली आई और बालिका के हाथ से वह घासपात से बनी रोटी झपट–झटक कर नौ दो ग्यारह हो गई। बिल्ली के इस वार के बाद बालिका जार–जार रोने लगी। माता का कलेजा फटा तो बालिका के पिता के धैर्य का बादल भी फटा। उसकी आंखों से भी दिल की पीर नेत्रों से बह उठी बनकर नीर।

जिस पिता ने यह दिल दहला देने वाला दश्य निहारा था, वह मेराड़ की धरती का स्वाभिमानी लोह लाडला सपूत था। स्वाधीनता संग्राम में आपदाओं, प्रहारों को हंस–हंसकर झेलने वाला राजपूत था। इतिहास ने उसे हिन्दुकुल सूर्य की संज्ञा प्रदान कर अपने पष्ठों मे स्थान दिया। बेटी के रुदन ने उस वीर साहसी, स्वाभिमानी प्रणवीर प्रताप का दिल भी दहला दिया।

प्रणवीर प्रताप का ढाढ़स, साहस जवाब सा देने लगा और काल के इस प्रहार के तप से पिघल उठा उसका स्वाभिमानी संकल्प। मन ही मन उसने सोचा कि मुगल बादशाह अकबर से संधि कर लेने क अलावा कोई विकल्प नहीं था।

उस वनखण्ड में भूख से बिलबिलाती बेटी के हाथ्र से घास की रोटी भी जब बिल्ली ने छीन ली तो उस अंथक योद्धा का साहस भी क्षीण होने लगा। दिल दहल उठा और उसने अपने हाथ में लेखनी पकड़ी और कागज। प्रताप के नेत्रों से आश्रुधारा बह उठी थी। अश्रुकण कागज पर ही टपाटप झर कर लिखित अक्षरों को साथ ही साथ धुंधला और फीका करते जा रहे थे। साथ ही खड़ी यह सब दश्य देख रही थी प्राणवीर प्रताप की धर्मपत्नी। राणा ने जब यी पत्र लिखकर पूर्ण कर लिया तो उन्होंने पूछा 'आर्यपुत्र किसे लिखा है यह पत्र' प्रताप ने लड़खड़ाती वाणी में उत्तर दिया –अकबर को लिखा है महाराणी। महाराणी ने किया सवाल 'क्या यह संधिपत्र है प्राणनाथ।' क्या लिखा है आपने इस पत्र में?

राणा बोले वही सब जिसे अस्वीकार करने के कारणराजसुख त्यागकर यह जीवन पथ ग्रहण किया था। राणा के मुख से सुनकर यह वाक्य क्षत्राणी गरज उठी – 'आप अपनी पुत्री के दुःख को नहीं झेल सके महाराणा। परन्तु क्या आपको नहीं आया है इस तथ्य का ध्यान कि जिन राष्ट्रभक्त जवानों ने आपके आह्वान पर सहस्त्रों की संख्या में अपने प्राणों का स्वतन्त्रता की देवी को रिझाने के लिए समर्पण किया, क्या उनकी पुत्रियों और सन्तानों के जीवन की आपदाओं-विपदाओं पर भी दिया है आपने ध्यान। हजारों माताओं ने अपनी गोदी के

– शेष पष्ठ ८ पर

श्री ज्वाला प्रसाद आर्य का अभिनन्दन

"आर्य समाज एक सम्प्रदाय नहीं, अपितु सामाजिक और धार्मिक पुनर्जागरण का एक आन्दोलन है। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती के प्रयास से ही भारत की स्वतंत्रता का आन्दोलन प्रारम्भ हुआ और समाज की नई कुरीतियों के विरूद्ध लोग सजग हुए। आज आर्य समाज को और सशक्त करने तथा वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार–प्रसार की पहले से अधिक आवश्यकता है।'' ये विचार बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान एवं विधान परिषद् में सत्ता पक्ष के नेता गंगा प्रसाद आर्य ने आर्यसमाज, बेतिया में आयोजित ज्वाला प्रसाद आर्य अभिनन्दन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में व्यक्त किये। इस अवसर पर सम्पूर्ण उत्तर–बिहार से आर्य समाज के आधारस्तम्भ रहे हैं, जिनके सौ वर्ष की अवस्था पूर्ण करने पर आर्य समाज, बेतिया द्वारा उनका अभिनन्दन किया जाना अनुकरणीय है। बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री रमेन्द्र गुप्ता आर्य ने कहा कि बेतिया में आर्य समाज के कार्यकर्ता वैदिकधर्म के प्रचार–प्रसार में जुटे हुए हैं, जिनके प्रेरणा स्रोत श्री ज्वाला प्रसाद आर्य जैसे कर्मठ और जुझारू व्यक्तित्व हैं। अभिनन्दन समारोह की अध्यक्षता करते हुए पूर्व सांसद एवं आर्यसमाज, बेतिया के सदस्य डॉ० संग्राम के क्रम में १९४२ के भारत छोड़ो आन्दोलन में इन्हें छः मास की काल कोठरी की सजा हुई थी, जिससे जुर्माना देकर और तीन दिनों की काल कोठरी झेलकर ये मुक्त हुए थे। हैदराबाद के निजाम के विरूद्ध सत्याग्रह में इनकी सक्रिय भागीदारी रही। लेकिन इसके लिए सरकार से कोई सुविधा प्राप्त करना ये अपने सिद्धान्तों के विरूद्ध मानते थे। बेतिया में आर्यसमाज की स्थापना एवं कई सामाजिक अभियानों की सफलता में श्री ज्वाला प्रसाद आर्य का योगदान रहा है। कार्यक्रम का संचालन करते हुए आर्य समाज, बेतिया के मंत्री कष्ण मोहन प्रसाद ने ज्वाला प्रसाद आर्य को एक आदर्श व्यक्तित्व के रूप में अभिनन्दित किया। प्रमण्डलीय आर्यसभा, मुजफ्फरपुर के उपप्रधान कमलेश दिव्यदर्शी एवं मंत्री इन्द्रदेव आर्य सहित विभिन्न आर्य समाजों की ओर से ज्वाला प्रसाद आर्य को अभिनन्दन पत्र, वस्त्र, वैदिक साहित्य एवं पुष्प-माल्य अर्पित कर सैकड़ों कार्यकर्ताओं द्वारा सम्मानित किया गया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में विभिन्न संगठनों के अधिकारी, कवि-साहित्यकार, समाजसेवी एवं महिलाएं उपस्थित थीं। आगत अतिथियों का स्वागत आर्यसमाज, बेतिया के प्रधान रघुनाथ आर्य चतुर्वेदी, उपप्रधान रूद्रदेव आर्य, कोषाध्यक्ष नन्दलाल आर्य, पुस्तकाध्यक्ष रामदेव आर्य एवं सूर्यदेव

क्या आप अमीर बनना चाहते हो?

हम देखते हैं, इस संसार में अमीर और गरीब अपनी नासमझी के कारण अपनी सुविधा के लिए आवश्यक वस्तु प्राप्त करने में असमर्थ है। अमीर धन अधिक होने पर उसे संभालकर रखने में चिंतायुक्त है, क्योंकि हर समय चोरों, लुटेरों का भय लगा रहता है। कार, कोठी आदि सब प्रकार की सुविधाएं होने के उपरान्त भी रातभर नींद नहीं आती। पहले काले कारनामों से खूब धन बटोरता है, फिर आयकर विभाग की नजरों से बचने की तरकीब सोचता है। अन्त में दुष्परिणाम भोगना ही पड़ता है। इन तथ्यों को देखते हुए मैं सोचता हूँ कि गरीब बनकर रहना ही अच्छा है। कम से कम गरीब आदमी रूखी–सूखी खाकर चिंतामुक्त होकर आराम से सोता है।

फिर भी हर व्यक्ति चाहता है कि उसके पास रहने के लिए अपना एक मकान हो। आने–जाने के लिए एक साईकिल या स्कूटर हो, खाने के लिए पौष्टिक आहार और शरीर ढकने के लिए वस्त्र हों। इन सब आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए धन कमाने का प्रयास करता है। धनोपार्जन करना कोई पाप नहीं है। खूब धन दौलत कमाओ; परन्तु ऐसा धन संग्रह मत करो जो चोरी बेईमानी का हो। चाहें आप डाक्टर हों, वकील हों या छोटे–बड़े व्यापारी हों, जहां भी काम करते हों, वहां ईमानदारी और परिश्रम से अपने कर्तव्यों का चल और अचल सम्पत्ति अधिक हो जाती है, तो उसकी बुद्धि खराब हो जाती है। धूम्रपान मद्यपान करने लगता है। लाटरी के चक्कर में जुआ खेलता है। घमण्ड हो जाता है। हर समय लड़ने को तैयार रहता है। हराम की कमाई बीमारी मुदकमें में चली जाती है। जीवन की अंतिम घड़ियों में जब कष्ट आते हैं, तब रोता है और मौत मांगने पर भी नहीं आती।

बहुत से लोग कहते हैं कि सच्चाई और ईमानदारी से धन नहीं कमा सकते, थोड़ी बहुत झूठ और बेईमानी अवश्य करनी पड़ती है। ऐसी बात वे लोग करते हैं, जो शीघ्र ही रातों रात लखपति, करोड़पति बनना चाहते हैं। गरीबों का खून चूसकर सौ रूपये के माल को दो सौ रूपये में बेचते हैं।

हमारा अनुभव है, आप शुद्ध आचरण से अपना काम करते रहो, एक दिन अवश्य उन्नति के शिखर पर पहुंच जाओगे। अपनी सभी गन्दी आदतों को छोड़ो और फिजूल खर्च बन्द करो। अपने घर के सब काम स्वयं करो। जहां तक संभव हो, अपना सामान उठाकर पैदल चलने में शर्म मत करो, आपकी मेहनत एक दिन अवश्य रंग लाएगी। ऐसे अनेक उदाहरण हैं, जो कभी बहुत निर्धन थे और निरन्तर परिश्रम से आज अरबपति बने हुए हैं। कभी अवकाश मिले, तो अब्राहम लिंकन का जीवन पढ़ लेना,

मदन प्रसाद जायसवाल ने कहा कि ज्वाला प्रसाद जी ने तीन पीढ़ियों के कार्यों का नेतत्व किया है। स्वतंत्रता आर्य ने किया।

— ***कष्णमोहन प्रसाद***
मंत्री, आर्य समाज बेतिया (बिहार)

पालन करो। एक भजन में कितनी उत्तम बात कही है—तू दौलत खूब कमाना लेकिन बस इतना ध्यान अवश्य रहे, "अपना घर—बार बसाने को औरों का घर बर्बाद न कर।"

याद रखो, शोषण करके हेराफेरी से कमाया हुआ धन आपको अनेक प्रकार की विपत्तियों में फंसा देगा। ऐसी कमाई किस काम की, जो आपको रोगी बना दे, आपकी जिन्दगी खतरे में पड़ जाए। दुनिया में रूपया पैसा सब कुछ नहीं। आप धन से बहुत बढ़िया रेशमी बिस्तर खरीद सकते है, परन्तु नींद प्राप्त नहीं कर सकते, उस धन का क्या लाभ है, जिसे प्राप्त करके रोटी हजम नहीं कर सकते।

हम देखते हैं, जब किसी के पास जो एक रेलवे कुली से अपने देश का राष्ट्रपति बन गया। मुझे एक शेर याद आ रहा है—

मिटा दे अपनी हस्ती को अगर कुछ मर्तबा चाहे कि दाना खाक में मिलकर गुले गुलजार होता है।

यदि आप कुछ बनना चाहते हो, तो पुरूषार्थ करो। अपनी आय की सीमा में रहो। जो आमदनी से अधिक खर्च करता है, वह गरीब ही नहीं, कर्जदार बन जाता है। सच पूछो तो वह बड़ा धनवान है, जो विद्यावान, चरित्रवान और बलवान है। भौतिक सम्पत्ति तो आज तेरी है, कल किसी और की है और हम सब यात्री हैं। एक दिन यहां से जाना है।

— ***देवराज आर्यमित्र,***
डब्ल्यू जेड- ४२८, हरि नगर, न. दि.

समस्त सम्बन्धित आर्यसमाजों से निवेदन

विवाह प्रमाण पत्र के लिए आवेदन करें

दिल्ली की समस्त आर्यमाजों की शिरोमणि सभा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आर्यसमाजों में सम्पन्न होने वाले विवाह संस्कारों को रिकार्डबद्ध कराने तथा आर्यसमाजों के नाम पर अन्य संस्थाओं द्वारा विवाह संस्कार कराने से रोकने के उद्देश्य से सम्बन्धित आर्यसमाजों को विवाह संस्कार कराने हेतु गत वर्ष से प्रमाणपत्र जारी किए जा रहे हैं। अधिकतर आर्यसमाजों ने आवेदन कर प्रमाणपत्र प्राप्त कर लिए हैं। जिन आर्यसमाजों ने अभी तक प्रमाणपत्र हेतु आवेदन नहीं किए हैं, उन्हें पुनः अवसर प्रदान किया जा रहा है। उनसे निवेदन है कि ३१ मार्च, २००८ तक प्रमाण पत्र प्राप्त करने के लिए ५००/— रुपये की शुल्क राशि के साथ अपनी आर्यसमाज के लैटरपैड पर आवेदन करें।

अन्तिम तिथि के उपरान्त आने वाले आवेदन पत्रों पर आगामी वर्ष २००९ तक कोई विचार नहीं किया जाएगा। अतएव जल्दी करें। शुल्क राशि ५००/— रुपये केवल चैक/ड्राफ्ट के रूप में ही मान्य होगी।

— ***विनय आर्य, महामन्त्री***

गुरुकुल टंकारा के ब्रह्मचारियों के दुग्धपान हेतु गोदान

श्री जनकराज महाजन एवं श्रीमती सावित्री महाजन, जनकपुरी निवासी, जोकि सच्चे ईश्वर विश्वासी एवं महात्मा प्रभुआश्रित जी के भक्त हैं। वे पिछले ५० वर्षों से निरन्तर यज्ञ कर रहे हैं। इस परिवार ने गुरुकुल टंकारा में ब्रह्मचारियों के दुग्धपान हेतु १५०००/— रुपये की राशि गोदान स्वरूप टंकारा ट्रस्ट के मन्त्री श्री रामनाथ सहगल को भेंट की। इस अवसर पर आर्यसमाज सी ब्लाक, जनकपुरी के अधिकारी भी उपस्थित थे।

आर्ष गुरुकुल रानी बाग मे

शिक्षक की आवश्यकता

आर्ष गुरुकुल रानी बाग दिल्ली के लिए सेवाभावी शिक्षक की आवश्यकता है जो हिन्दी संस्कत शिक्षण के साथ—साथ व्यवस्था कार्य में भी सहयोग दे सके। आवास — भोजन के साथ—साथ योग्यतानुसार वेतन दिया जाएगा। सम्पर्क करें :—

माता प्रेम लता शास्त्री
मो०: ९९५३७७४८४०

अखिल भारतीय हकीकतराय सेवा समिति के तत्वावधान में आर्यसमाज वाई ब्लाक सरोजनी नगर, नई दिल्ली में

धर्मवीर हकीकत राय बलिदान दिवस समारोह

रविवार १७ फरवरी, २००८

गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी धर्मवीर हकीकत राय बलिदान दिवस समारोह रविवार १७ फरवरी, २००८ को आर्यसमाज वाई ब्लाक, सरोजनी नगर नई दिल्ली में प्रातः ८.३० बजे से दोपहर १ बजे तक समारोह पूर्वक मनाया जाएगा। इस अवसर पर प्रातः ८.३० बजे यज्ञ, तदुपरान्त भजन एवं १० से १२ बजे तक रतनचन्द आर्य पब्लिक स्कूल के बच्चों का विशेष कार्यक्रम हकीकत राय नाटिका तथा अन्य स्कूल के बच्चों के भाषण–कविता आदि होंगे। इस अवसर पर १२ बजे से श्रद्धांजलि सभा होगी जिसमें उच्च कोटि के विद्वान व आर्यनेता पधार कर अपने विचार रखेंगे।

इस अवसर पर एक दिन पूर्व कक्षा पांचवी से १२वीं के बच्चों की कविता/भाषण प्रतियोगिता होगी, जिनमें विजाताओं को स्व० श्री रतनलाल सहदेव की स्मति में उनके सुपुत्र श्री अशोक सहदेव द्वारा इनाम दिए जाएंगे।

जिन विद्यालयों के छात्र/छात्राएं भाग लेना चाहें वे, महामन्त्री, अखिल भारतीय हकीकत राय सेवा समिति, आर्यसमाज सरोजनी नगर नई दिल्ली, दूभाष : २४६७७०६३ पर सम्पर्क करें।

— ***रोशनलाल गुप्ता, महामन्त्री***

विद्यार्थी व्यक्तित्व परिष्कार शिविर सम्पन्न

वेदव्यास डी०ए०वी० पब्लिक स्कूल विकासपुरी में वार्षिक विद्यार्थी चरित्र एवं व्यक्तित्व परिष्कार शिविर की श्रंखला में ११ एवं १२ दिसम्बर, ०७ को हंसराज सभागार में सहस्रों छात्र-छात्राओं ने सोत्साह भाग लेकर धैर्य, साहस, परोपकार, करुणा, मैत्री आदि दिव्य गुणों को धारण करने का

आर्य उप प्रतिनिधि सभा प्रयाग तत्वावधान मे

वैदिक धर्म प्रचार शिवर माघ मेला २००८

१४ जनवरी से ११ फरवरी, ०८

शिविर स्थल : काली सड़क उत्तरी भूखण्ड संख्या १ अ एवं १ ब (पुल के पास) प्रयाग

चतुर्वेद शतकम एवं नित्य पंच महायज्ञ मेले का उद्‌घाटन मकर संक्रान्ति १४ जनवरी, ०८ को हुआ और यह ११

आर्यसमाज भेरा इन्कलेव, नई दिल्ली के

वार्षिकोत्सव के अवसर पर विक्लांगों हेतु कार्यक्रम

पद्‌मश्री ज्ञान प्रकाश चोपड़ा जी के आशीर्वाद से आर्यसमाज भेरा एन्कलेव के वार्षिक उत्सव में विक्लांगों पर विशेष कार्यक्रम १३ जनवरी, ०८ को सम्पन्न हुआ, जो यज्ञ से आरम्भ हुआ जिसके ब्रह्मा आचार्य श्री चन्द्रशेखर शास्त्री एवं श्री प्रमोद कुमार थे। यज्ञोपरान्त आशा मताजी ने अपने मधुर वाणी में वेदों पर संक्षिप्त विचार दिए। इस अवसर पर डॉ० महेश विद्यालंकार जी का प्रवचन हुआ, उन्होंने कहा कि हमें आर्यसमाज की गरिमा को ध्यान में रखते हुए कार्यक्रमों का आयोजन करना चाहिए। तत्पश्चात् भजनों का कार्यक्रम हुआ, जिसमें श्री नरेन्द्र आर्य एवं उनके साथियों ने अपने भजनों द्वारा लोगों को आकर्षिक किया। इसके साथ झब्बन लाल आर्य डीएवी पब्लिक स्कूल, पश्चिम विहार एवं एस० एल० सूरी डी०ए०वी० पब्लिक स्कूल जनकपुरी के विद्यार्थियों ने सांस्कतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। इसमें श्री रामनाथ सहगल ने अध्यक्षता की। मुख्य रूप से श्री सज्जन कुमार (सांसद), डॉ. विजेन्द्र सिंह (विधायक), दिल्ली सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य, श्री बलदेव जिन्दल जी उपस्थित थे। इसके अतिरिक्त विभिन्न आर्य समाजों से भी उनके मुख्य प्रतिनिधि आए थे। इस कार्यक्रम में आठ विक्लांग भाई–बहिनों को ट्राई–सिकिल, दो विक्लांगों भाईयों को व्हीलचेयर और दो नेत्रहीन भाईयों को उनसे सम्बन्धित पुस्तकें दी गई। ये सब सामान प्रतिष्ठित लोगों ने दान स्वरूप आर्यसमाज भेरा इन्कलेव के माध्यम से वितरित की।

— ***चन्द्रमोहन खन्ना, प्रधान***

↑ *विक्लांगों को ट्राई-सिकिल वितरित करते सासंद श्री सज्जन कुमार, विधायक श्री विजेन्द्र सिंह, एवं आर्यसमाज के अधिकारी एवं सदस्यगण।*

संकल्प लिया।

इस अवसर पर शिविराध्यक्ष जो शिक्षा के क्षेत्र में नैतिक मूल्यों के समावेश के कारण, भारत के महामहिम राष्ट्रपति के द्वारा सम्मानित प्रिं० चित्रा नाकरा जी ने छात्रों को सम्बोधित करते हुए कहा कि सुसंस्कारित, चरित्रवान, ईमानदार नवयुवक ही समाज एवं राष्ट्र के उत्थान में महती भूमिका का निर्वहन कर सकते हैं। अहिंसक एवं अनुशासित विद्यार्थी ही अपने शौर्य से देश की तकदीर लिखकर इतिहास रचते हैं।

आर्यजगत् के प्रसिद्ध विद्वान आचार्य भगवानदेव वेदालंकार जी एवं श्रीमान हरेन्द्र शास्त्री जी ने आशा व्यक्त की कि डी०ए०वी० संस्थाओं के चरित्र्वान विद्यार्थी ही धर्म एवं संस्कति का दीप जलाकर उसे सारे संसार को रोशन करेंगे।

— प्रिं० चित्रा नाकरा

फरवरी — बसन्त पंचमी तक चलेगा। इस शिविर में समस्त धर्मबन्धु सपरिवार इष्टमित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं।

— आर्य राजेन्द्र कूपर, मन्त्री

नवप्रभात गुरुकुल विश्वविद्यालय का

शिलान्यास समारोह

नवप्रभात धर्मार्थ न्यास गुरुकुल प्रभात आश्रम नूआंपाति, कनसिंहा, पदमपुर, जिला बरगढ (उडीसा) के सहयोग से आगामी १८ से २१ फरवरी, २००८ को विश्वभूत महायज्ञ एवं नवप्रभात गुरुकुल विश्वविद्यालय का शिलान्यास समारोह भव्यता के साथ आयोजन किया जा रहा है।

आप सब अधिकाधिक संख्या में पधारकर धर्मलाभ प्राप्त करें एवं समारोह की शोभा बढ़ाएं।

— डॉ० सोमदेव शतांशु, कार्यक्रम समन्वयक

सभा द्वारा दिल्ली के ग्रामीण क्षेत्र औचन्दी में संचालित

दीवानचन्द स्मारक गोकुलचन्द आर्य धर्मार्थ चिकित्सालय हेतु एक कमरे का दान

आर्यसमाज औचन्दी, दिल्ली के प्रधान मा० गंगाराम सुपुत्र श्री केहरी ने अपनी धर्मपत्नी श्रीमती वीरमति जी की स्मति में एक कमरे के निर्माण हेतु ५५०००/— रुपये की राशि का सात्विक दान प्रदान किया है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं चिकित्सालय के समस्त अधिकारी आपका हार्दिक धन्यवाद करते हैं तथा परमपिता परमात्मा से आपके दीर्घ आयु की कामना करते हैं।

— महामन्त्री

शोक समाचार

आर्यसमाज लड्डूघाटी, पहाड़गंज नई दिल्ली के प्रधान

श्री श्रीराम निझावन का निधन

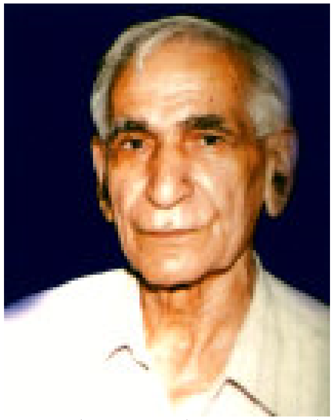

आर्यसमाज लड्डू घाटी, पहाड़गंज, नई दिल्ली के प्रधान एवं वरिष्ठ आर्यनेता श्री श्रीराम निझावन जी का दिनांक १८ जनवरी को लगभग ६० वर्ष की आयु में दुःखद देहावसान हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से पंचकुइयां शमशानघाट पर आर्यसमाज मॉडल बस्ती के धर्माचार्य श्री जय प्रकाश शास्त्री ने सम्पन्न कराया। उनके सुपुत्र श्री अश्विनी निझावन ने चिता को मुखाग्नि दी।

श्री निझावन जी गत कुछ समय से अस्वस्थ थे। वे एक कट्टर एवं सिद्धान्तवादी आर्यसमाजी थे। वे पिछले कई वर्षों से आर्यसमाज लड्डू घाटी के प्रधान थे, तथा उन्होंने काफी समय तक जनसंघ से लेकर अबतक भारतीय जनता पार्टी में कार्य किया। वे कई वर्षों तक साईकिल मार्केट झण्डेवालान के अध्यक्ष रहे।

वे अपने पीछे तीन पुत्रों सर्वश्री अश्विनी, अजय, राजेश एवं तीन सुपुत्रियों सविता अरोड़ा, सुषमा मुखी, प्रोमिला बेदी का भरा—पूरा परिवार को छोड़ गए हैं। उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सरला देवी जी एवं बड़े सुपुत्र श्री विजय निझावन की पूर्व में मत्यु हो चुकी है।

स्वर्गीय श्री निझावन जी की स्मति में श्रद्धांजलि सभा रविवार २० जनवरी, ०८ को दोपहर ३ बजे आर्यसमाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली में आयोजित की गई, जिसमें श्री जयप्रकाश शास्त्री जी के प्रवचन एवं पं० राजवीर शास्त्री के भजन हुए। इस अवसर पर आर्यसमाज के अनेक पदाधिकारियों सर्वश्री अमरनाथ गोगिया, विजय सचदेवा, वीरभान चावला सहित अनेक गणमान्य लोगों ने अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। श्री निझावन परिवार की ओर से विभिन्न संस्थाओं के लिए दानराशि निकाली गई।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करें।- सम्पादक

साप्तहिक आर्य सन्देश
21 जनवरी, 2008 से 27 जनवरी, 2008
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–११०००१

दिल्ली पोस्टल रजि. नं० डी.एल. (एन.डी.) - ११/६०७१/२००६-२००८
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने की दिनांक २४/२५–०१–२००८
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं० यू०(सी०) १३६/२००६-०८
आर. एन. नं. ३२३८७/७७

आर्यसमाज बाहरी रिंग रोड विकासपुरी का

२४वां वार्षिकोत्सव एवं यजुर्वेद पारायण यज्ञ

७ से १० फरवरी, २००८

यजुर्वेद पारायण यज्ञ : प्रतिदिन प्रातः ७ से ६ बजे
ब्रह्मा : आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री **वेदपाठ :** गुरुकुल गौतम नगर के ब्रह्मचारी
भजन : श्री नरेन्द्र वशिष्ठ **वक्ता :** डॉ० भवानीलाल भारतीय
विषय : स्वामी दयानन्द के मानव जति पर उपकार
भजन-प्रवचन : रात्रि ८ बजे से ६.३० बजे तक

वार्षिक आर्य महिला सम्मेलन : ८ फरवरी, ०८ दोपहर २ से ५.३० बजे
मुख्य अतिथि : डॉ० सविता आर्या **विशिष्ट अतिथि :** माता प्रेमलता शास्त्री

समापन समारोह : १० फरवरी, २००८
मुख्य समारोह : प्रातः १०.३० बजे से **अध्यक्ष :** श्री बलदेव राज सेठ
मुख्य अतिथि : सर्वश्री यशपाल आर्य, सुनील जिन्दल, श्रीमती सुनीता जिन्दल, बलबीर त्यागी।
विशिष्ट अतिथि : सर्वश्री धर्मपाल आर्य (प्रधान, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली) श्री विनय आर्य (महामन्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा)
वक्ता - डॉ० भवानीलाल भारतीय, श्री नरेन्द्र आर्य, आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री

आप सब अधिकाधिक संख्या में पधारकर उत्सव की शोभा बढ़ाएं।

कुलभूषण कुमार, प्रधान *ललित कुमार चौधरी, मन्त्री*

चारों वेदों का हिन्दी भाष्य (चार भागों में)
सम्पूर्ण वेद भाष्य का मूल्य 1800/- रुपये
प्राप्त करें मात्र 1500/- में
-: प्राप्ति स्थान :-
वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001; दूरभाष : 011-23360150, 23343737

पृष्ठ 5 का शेष

लाग गंवाए क्या राणा कभी उनके दुःख, कष्ट भी आपके ध्यान में नहीं आए। आपकी पुत्री के पेट में कौर नहीं जा पाया – यदि वह भूख से दम ही तोड़ जाती है तो क्या उन हजारों के बलिदान से तुलना हो पाती। क्या मातभूमि के गौरव और हिन्दू जाति की गरिमा से भी अधिक मूल्यवान है आपकी बेटी का जीवन? राणा ने जब अपनी सहधर्मिणी के मुख से सुने ये प्रेरक उद्‌गार तो उनके मुख से गूंज उठे ये शब्द – 'देवी तुम धन्य हो तुमने मुझे पतन के पथ पर गिरने से थाम लिया। उन्होंने संधिपत्र को तुरन्त फाड़कर फेंक दिया। प्राणवीर के प्रण की रक्षक सिद्धि हुई महाराणा प्रताप की वह वीरव्रती धर्मपत्नी।

आर्यसन्देश के वार्षिक सदस्यों की सेवा में

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र ***साप्ताहिक "आर्यसन्देश"*** के समस्त वार्षिक सदस्यों ने निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क यथाशीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें, जिससे कि उन्हें नियमित रूप से आर्यसन्देश भेजा जाता रहे। जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हों उनसे निवेदन है कि वे अपना आजीवन शुल्क भेजें। इस कार्य को यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें अन्यथा ***इस मास से आर्यसन्देश भेजना बन्द कर दिया जाएगा।*** ***वार्षिक शुल्क १००/- रुपये*** तथा ***आजीवन शुल्क ५००/- रुपये*** है। पत्र व्यवहार के लिए सदस्य संख्या तथा पिनकोड अवश्य लिखें। – *सम्पादक*

आर्यसमाज महर्षि दयानन्द नगर, तलवंडी, कोटा (राज०) में

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस सम्पन्न

"मेरा रंग दे बसन्ती चोला" के मुधर गीत के साथ कार्यक्रम का प्रारम्भ हुआ। स्वामी श्रद्धानन्द जैसे बलिदानी के कारण ही हम आज स्वतन्त्र भारत में सांस ले रहे हैं। पण्डित बिरधी चन्द शास्त्री के सम्बोधन के बाद बहन स्नेहलता द्वारा प्रस्तुत भजन "महर्षि तेरे अहसां को न भूलेगा जहां बरसों" ने भाव–विभार किया। तत्पश्चात् आर्यसमाज तलवण्डी द्वारा कोटा के वरिष्ठ वयोवद्ध एवं कर्मठ समाज सेवियों का समाज एवं विद्वानों द्वारा फूलमाला पहनाकर एवं शाल ओढ़ाकर सम्मान किया, जिसमें लक्ष्मीनारायण जी बरथुनीया, तुलाराम जी यादव, लालचन्द आर्य एवं कंवरलाल सुमन प्रमुख थे। उपदेशक पं० श्री अमर सिंह जी एवं हरीश चन्द्र विद्यावाचस्पति ने अपने ओजस्वी भजनों एवं उपदेश के माध्यम से स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन पर प्रकाश डाला।

– श्रीचन्द गुप्ता, प्रधान

महर्षि दयानन्द सरस्वती के अमरग्रन्थ

"सत्यार्थप्रकाश"

लेखन के स्वर्णिम १२५ वर्ष

आओ ! पढ़ें और पढ़ाएं

सत्यार्थ प्रकाश

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज खेड़ा अफगान सहारनपुर (उ०प्र०)

प्रधान : श्री आदित्य प्रकाश गुप्त
मन्त्री : श्री कुंवर पाल सिंह आर्य
कोषाध्यक्षः श्री ओम प्रकाश

आर्यसमाज हिल्सा, नालन्दा का

७६वां वार्षिकोत्सव

१६-२२ अप्रैल, २००८

आर्यसमाज हिल्सा, जिला नालन्दा, (बिहार) का ७६वां वार्षिकोत्सव दिनांक १६, २०, २१, २२ अप्रैल, २००८ को आयोजित किया जा रहा है। आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधारकर धर्मलाभ प्राप्त करें।

– सुरेश प्रसाद आर्य, उपमन्त्री

वेद प्रचार मंडल पश्चिमी दिल्ली का निर्वाचन सम्पन्न

श्री सुरेन्द्र बुद्धिराजा प्रधान चुने गए

दिनांक २० जनवरी, २००८ को आर्यसमाज कीर्ति नगर, नई दिल्ली में सम्पन्न हुए पश्चिमी दिल्ली वेद प्रचार मंडल के चुनावों में श्री सुरेन्द्र बुद्धिराजा जी को प्रधान पद के लिए निर्वाचित घोषित किया गया। निर्वाचन अधिकारी का दायित्व श्री सोमदत्त महाजन जी ने निर्वाह किया।

समस्त आर्यजनों की ओर से श्री बुद्धिराजा जी को हार्दिक शुभकामनाएं एवं बधाई।

दिल्ली सभा के "वैदिक प्रकाशन" की शानदार प्रस्तुति

दयानन्द लघुग्रन्थ संग्रह

(स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती द्वारा सम्पादित)

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा रचित
गौकरुणानिधि, पंच महायज्ञविधि, व्यवहारभानु, आर्योद्देश्यरत्नमाला एवं आर्याभिविनय का अद्भुत संग्रह

केवल मात्र २५/- रुपये

डाक से मंगाने पर डाक व्यय अतिरिक्ति देय होगा।

प्राप्ति स्थान : दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली-१

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र० राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए सार्वदेशिक प्रेस, १४८८ पटौदी हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली– २ से छपवाकर **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५–हनुमान रोड नई दिल्ली-१; दूरभाष : २३३६०१५०; फैक्स २३३६५६५६; E-mail : aryasabha@yahoo.com** से प्रकाशित किया।

सम्पादक : **ब्र० राजसिंह आर्य** सह सम्पादक : **विनय आर्य** व्यवस्थापक : **सुशील महाजन** सह व्यवस्थापक : **डॉ० ओमप्रकाश भटनागर**